Dr. Priti Ranjan
H.D. Jain College (Ara)
Deptt of History
B.A Part-I
paper - 1
Topic - Skandagupta Ki uplabdhiyan.

आगम... —

स्कन्द गुप्त की उपलब्धियों पर प्रकाश डालिये ? { Roll No- 47 }

सन् 455 ई० मे कुमार गुप्त की मृत्यु के बाद उसका पुत्र स्कंदगुप्त साम्राज्य का उत्तराधिकारी बना। वह एक पराक्रमी शासक था। इसके समय में उत्तराधिकारी के लिए संघर्ष शुरु हुआ था। तथा स्कन्दगुप्त के भाई का नाम पुरु गुप्त था। पुरुगुप्त ने स्कन्द गुप्त की माँ को कैद कर लिया था। इनकी जानकारी जूनागढ़ के अभिलेख भितरी अभिलेख तथा कुछ साहित्य है → आर्य मंजुश्री मूल कल्प कथा सरित सागर, मंदसौर अभिलेख। उसने पुष्यमित्रास को पराजित किया। सिंहासनारूढ़ होने के तत्काल बाद मध्य एशिया के क्रूर बर्बर जाति के हूणो ने आक्रमण किया। स्कन्दगुप्त ने 460 ई० में हूणों को इतनी बुरी तरह पराजित किया कि हूण आगामी पचास वर्षों तक भारत पर आक्रमण करने का साहस नहीं कर सके. इसकी चर्चा जूनागढ़-अभिलेख में मिलता है। स्कन्द गुप्त को कहौम स्तम्भ लेख में 'शक्रोपम' आर्य मंजुश्रीमूलकल्प में 'देवराय' कहा गया है। इनकी स्वर्ण मुद्राओं पर विक्रमादित्य की उपाधि मिलती है। स्कन्दगुप्त एक महत्वकांक्षी राजा था और इसकी जानकारी हमें इस प्रकार प्राप्त होता है। कि उसने नागराज्य के शासक को भी परास्त किया था। वाकाटक शासकों से भी युद्ध किया इसकी चर्चा मंदसौर अभिलेख में है। कुमार गुप्त के बाद वाकाटक शासक नरेन्द्रसेन ने मालवा को अपने अधिकार में कर लिया। स्कंद गुप्त न केवल एक योग्य सैन्य संचालक थे अपितु एक आदर्श प्रशासक भी थे।

राज्य - विस्तार

स्कन्दगुप्त ने शनै-शनै अपने वंश राज्य और देश पर आई विपत्तियों को दूर किया। वह अपने पैतृक साम्राज्य पर सुचारु रूप से शासन करता रहा। विभिन्न प्रांतों से प्राप्त उसके सिक्कों से उसके राज्य की अखंडता का परिचय मिलता है। उसके कुछ भारी तौल वाले सिक्कों बिहार और बंगाल से प्राप्त हुए हैं।

अनेक प्रकार के चाँदी के सिक्कों से यह पता चलता है कि वह पश्चिमी भारत पर भी राज्य करता था। अत: सिक्कों के द्वारा यह अनुमान लगाया जाता है कि स्कन्दगुप्त का राज्य अत्यन्त विशाल था। लगभग सारा उत्तर-भारत → उत्तर में हिमालय से दक्षिण में विन्ध्य तक और पश्चिम में अरब सागर से पूरब में बंगाल की खाड़ी तक का क्षेत्र उसकी राज्य-सीमा के भीतर था।

स्कन्द गुप्त की सबसे बड़ी उपलब्धियाँ

अपने पैतृक राज्य का संरक्षण करते हुए अपने शत्रुओं के बढ़ते हुए बल-प्रवाह को रोका। अपने राज्यारोहण के शीघ्र ही उसे हूणों के साथ जूझना पड़ा था। चन्द्रगर्भपरिपृच्छा से भी यह ज्ञात होता है कि उसे बारह वर्षों तक सर्व: संघर्ष करना पड़ा। वह एक महान विजेता, राष्ट्र का मुक्तिदाता गुप्त साम्राज्य के गौरव का पुन: स्थापक, उदार एवं महान शासक तथा संगठनकर्ता था। इस प्रकार और यही महान व्यक्ति ने गुप्त साम्राज्य को एक बड़े संकट से मुक्त किया।

प्रथम हूण शासक तोरमाण था जिसका प्रथम अभियान को स्कन्दगुप्त ने असफल बना दिया। इसलिए यदि समुद्रगुप्त 'सर्वराजोच्छेत्ता' और चन्द्रगुप्त द्वितीय 'शकारि' था तो स्कन्दगुप्त को 'हूण-विजेता' होने का गौरव प्राप्त था।

लेकिन कुछ इतिहासकारों में इस घटना को लेकर विवाद है: जैसे कि-

स्मिथ ⇒ "स्कन्दगुप्त के राज्यकाल के अन्तिम दिनों में पुनः हूणों का आक्रमण हुआ। लेकिन इस बार स्कन्द गुप्त उसका सामना सफलतापूर्वक नहीं कर सके और बाद में मृत्यु हो गई।"

कुछ इतिहासकारों इस वाक्य का खण्डन करते है।

डॉ० बी० पी० सिन्हा

जब हमें स्कन्दगुप्त के अन्तिम दिनों का इतिहास ही ठीक-ठीक मालूम नहीं है, तो यह निष्कर्ष

निकालना कि स्कन्दगुप्त हूणों से लड़ते हुए मारा गया, न्याय-संगत प्रतीत नहीं होता है।

शासन नीति

प्रशासन के क्षेत्र में उसने प्रजा के हितों को स्ख्याल रखा। जूनागढ़ लेख के ही अनुसार, उसके समय न तो कोई बहुत कठोर में था और न ही किसी को विशेष दण्ड दिया जाता था। सौराष्ट्र के गवर्नर की नियुक्ति के लिए उसने जो योग्यताएँ निश्चित की थी, वह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि अधिकारियों की नियुक्ति के पहले वह जनता की खुशहाली देखता था और उसके बाद वह अधिकारियों की नियुक्ति में योग्यता को विशेष महत्व दिया करता था। कुछ अधिकारियों का नाम → पर्णदत्त (सौराष्ट्र का राज्यपाल), भीम वर्मा (कोसम क्षेत्र का शासक), चक्रपालित (गिरिनार का पदाधिकारी) आदि प्रमुख थे।

धर्म

वह स्वयं वैष्णव था और साथ ही धर्मसहिष्णु था ~~लेकिन~~ वह अपने काल में जैन मूर्तियाँ भी बनवायीं तथा उसके एक सिक्कों पर लक्ष्मि की आकृति भी अंकित है। इसलिए बौद्ध ग्रन्थ आर्यमंजुश्रीमूलकल्प में उसे श्रेष्ठ, बुद्धिमान और धर्मशील राजा कहा गया है।
भितरी में स्कन्दगुप्त ने विष्णु-मंदिर और विष्णुप्रतिमा की स्थापना की।

आर्थिक जीवन

उद्योगों का देख-भाल श्रेणियों द्वारा होता था। तैलिक-श्रेणी इसके लिए प्रयुक्त था। इसके अतिरिक्त अग्रहारिक तथा सौल्किक थे। अग्रहारिक तथा सौल्किक कर वसूलनेवाले अधिकारी थे। बैंकों की तरह श्रेणियाँ समाज के दान के लिए होता था।

मुद्राएँ

उसने तीन प्रकार की मुद्राएँ चलाई →
उसके कुछ भारी तौल वाले सिक्कों बिहार और बंगाल से प्राप्त किये जाये सकते हैं।

इनकी स्वर्ण मुद्राओं पर विक्रमादित्य की उपाधि मिलती है।

धनुर्धर, राजलक्ष्मी तथा अश्वारोही। उसने पश्चिम और मध्य भारत में चाँदी की मुद्राएँ भी जारी की। पश्चिमी मुद्राओं में वृषभ-शैली की मुद्राएँ विशेष उल्लेखनीय है। लेकिन कुछ समय बाद वल्लभी के मैत्रक सम्राटों ने अपना लिया। वल्लभी गुप्त-राजाओं के अधीन था। फिर गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद वल्लभी एक स्वतंत्र राज्य हो गया।

इस प्रकार उनकी उपलब्धियाँ भारतीय इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण है। यह सत्य है कि अपने पूर्वजों की तरह वह अधिक दिनों तक सत्ता की बागडोर तो नहीं सम्भाल सके। (456 A.D – 470 AD) लेकिन जितने ही समय वे गुप्त राज्य वंश के शासक रहे अनेकानेक महत्वपूर्ण कार्य किए। गिरिनार पर्वत पर स्थित सुदर्शन झील का मरम्मत करवाया था। और इस झील के किनारे एक विष्णु मंदिर का निर्माण भी करवाया था।

स्कन्द गुप्त गुप्त वंश का अन्तिम शासक होने के बावजूद कम महत्वपूर्ण देन नहीं दी है। वह एक श्रेष्ठ, बुद्धिमान और धर्मवत्सल राजा था।